मई 2022 वर्ष 2, अंक 5

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी) दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम

डी.ई.आई.–डी.ई.पी. समाचार

एक अच्छा शिक्षक मोमबत्ती की तरह होता है –जो खुद जलकर दूसरों के लिए रास्ता रोशन करे। आदर्श शिक्षक वे होते हैं जो खुद को उन पुलों के रूप में प्रस्तुत करें जिन पर वे अपने शिष्यों को उन्हे पार करने के लिए आमंत्रित करते हैं। फिर उनको पार करने की सुविधा प्रदान करते हुए, खुशी से ढह जाते हैं, और इस तरह उन्हें उनके स्वयं के पुल बनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

–डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन

विशय सूचि

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से 2

भारत में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता पर कुछ विचार 3

ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के कुछ आँकड़े 5

सूचना केन्द्र से समाचार 8

डी.ई.आई.–डी.ई.पी. समाचार समिति 8

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा– 282005

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से

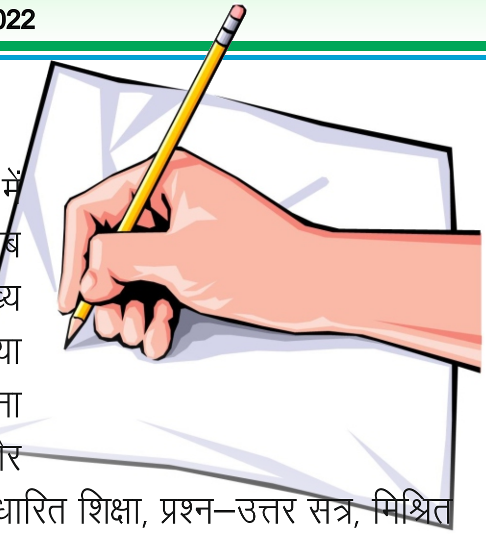

न्यूज़लैटर के पिछले अंकों में, हमने इस कॉलम में छात्रों द्वारा सीखने में रुचि की कमी के बारे में कुछ शिक्षाविदों की चिंता को व्यक्त किया था, जब सीखने के पारंपरिक तरीकों का उपयोग किया जाता है और जिसका मुख्य कारण छात्रों की ध्यान अवधि में कमी का होना है। इससे यह स्पष्ट हो गया कि बेहतर सीखने के लिए, छात्रों को सिर्फ सुनने से ज्यादा कुछ और करना चाहिए। उदाहरण के लिए, वे लिख सकते हैं, चर्चा कर सकते हैं और समस्याओं (problems) को हल करने में लगे रह सकते हैं। प्रोजेक्ट–आधारित शिक्षा, प्रश्न–उत्तर सत्र, मिश्रित शिक्षा, फ्लिप्ड (flipped)–क्लासरूम आदि के उपयोग पर इस संदर्भ में न्यूज़लैटर के पिछले संस्करणों में चर्चा की गई है।

हाल ही में, डायना एल–अजार, सीनियर डायरेक्टर, Strategic Communication & Thought Leadership, world इकोनॉमिक फोरम ने इस बात पर जोर दिया है कि शैक्षणिक संस्थानों को सक्रिय शिक्षण (Active Learning) और शिक्षण कौशल की ओर बढ़ना चाहिए जो एक बदलती दुनिया में टिके रहेंगे। उनके अनुसार, 'व्याख्यान शिक्षण का एक प्रभावी तरीका है पर सीखने का एक अप्रभावी तरीका है। छात्रों को अपना ज्ञान प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालय और कॉलेज सदियों से प्रोफेसरों के लिए लागत प्रभावी तरीकों के रूप में उनका उपयोग कर रहे हैं।' वह तब अपनी चिंता व्यक्त करती हैं कि इस प्रक्रिया के माध्यम से सीखने के परिणाम कम हैं और इस तरह से सीखी गई छोटी जानकारी को आसानी से भुला दिया जाता है (जैसा कि 'एबिंगहॉस फॉरगेटिंग कर्व' द्वारा दिखाया गया है)। और फिर सीखने के परिणामोन्मुखी बनकर उच्च शिक्षा को अधिक सार्थक बनाने के लिए, वह सुझाव देती हैं कि 'व्याख्यानों को सक्रिय शिक्षण (Active Learning) द्वारा प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए'।

एबिंगहॉस फॉरगेटिंग कर्व पर एक छोटे प्रकाशन (प्रवीण श्रेष्ठ, साइकिस्टडी, 17 नवंबर, 2017) ने मुझे कुछ साल पहले डी.ई.आई. में अपनाई गई निरंतर मूल्यांकन की 'फॉरगेटिंग कर्व' और 'डेली होम असाइनमेंट (डीएचए)' योजना के बीच सामान्य आधार की खोज के लिए प्रेरित किया। एबिंगहॉस के अनुसार, जब तक सीखे ज्ञान की बार–बार समीक्षा नहीं की जाती है, तब तक मस्तिष्क की स्मृति को कुछ दिनों या हफ्तों में समय के साथ बनाए रखने की क्षमता में कमी होती है। हरमन एबिंगहॉस के अनुसार, स्मृति समय के साथ तेजी से घटती जाती है और भूलने की अवस्था पहले दो दिनों में बहुत तेज होती है। यह स्मरण आता है कि एनी मर्फी पॉल ने '*Researchers Find That Frequent Tests Can Boost Learning*' शीर्षक से एक पेपर Scientific American, August 2015 में प्रकाशित किया था। परीक्षाओं के पहले और बाद में अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई गतिविधियों में शामिल होने के साथ–साथ परीक्षा देने से बिना परीक्षा की शिक्षा की तुलना में तथ्यों की बेहतर याद – और गहरी और अधिक जटिल समझ पैदा हो सकती है। इस प्रकार यदि सीखने को प्रासंगिक गतिविधि द्वारा समर्थित किया जाता है, तो पुनर्प्राप्ति स्मृति को मजबूत करती है और इसे लंबे समय तक बनाए रखती है।

विकिपीडिया के अनुसार, ''सक्रिय शिक्षण'' सीखने का एक ऐसा तरीका है जिसमें छात्र सक्रिय रूप से या अनुभवात्मक रूप से सीखने की प्रक्रिया में शामिल होते हैं।

दो प्रतिष्ठित शिक्षाविदों की एक यूजीसी समिति ने एनईपी 2020 के संदर्भ में डी.ई.आई. शिक्षा ढांचे की नवीन विशेषताओं का अध्ययन करने के लिए 30 अप्रैल और 1 मई, 2022 को डी.ई.आई. का दौरा किया। उनमें से एक – प्रो. टी. कुमार, कुलपति, केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़, हरियाणा ने आगंतुक (visitors) पुस्तिका में निम्नलिखित अवलोकन किए:

डी.ई.आई. उत्कृष्ट कार्य कर रहा है। गतिविधि (activity) पाठ्यक्रम की कुंजी है। छात्र, कर्मचारी और डी.ई.आई. के सभी सहयोगी शिशु से लेकर वरिष्ठ नागरिकों तक हर वर्ग के गरीब से लेकर उच्च वर्ग के लोगों तक सामुदायिक सेवाओं में शामिल हैं। एच.ई.आई. में ऐसी गतिविधि दुर्लभ है। व्यावहारिक/गतिविधि के माध्यम से शिक्षण–अधिगम वास्तव में अद्भुत है।

यह भी कि डी.ई.आई. के पाठ्यक्रम गतिविधि–उन्मुख हैं, इसकी cap (टोपी) पर एक feather (पंख) लगाने के समान है; और हमारे (डी.ई.आई. के) visionary श्रद्धेय मार्गदर्शकों, की दूरदर्शिता का परिणाम है।

(प्रो. वी.बी. गुप्ता)

भारत में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता पर कुछ विचार

भारत में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के किसी भी प्रयास को पहले गुणवत्ता के लिए बेंचमार्क तय करने का प्रयास करना चाहिए। हममें से जिन्होंने पचास से साठ साल पहले हमारी उच्च शिक्षा प्राप्त की, उनके लिए शैक्षणिक सामग्री (Academic Content) या विषय ज्ञान गुणवत्ता का मुख्य संकेतक था। लगभग चालीस साल पहले, आईआईटी, दिल्ली के कपड़ा विभाग के स्नातक छात्रों के कुछ प्रतिष्ठित नियोक्ताओं (employers)के साथ बातचीत करते हुए, मुझे याद है कि मैंने उनसे कहा था कि नौकरी से संबंधित कौशल हमेशा अल्पकालिक ऑन–जॉब (on-job) प्रशिक्षण के माध्यम से हासिल किए जा सकते हैं। और उच्च शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य प्राथमिक रूप से अवधारणाओं की समझ और गंभीर रूप से सोचने की क्षमता प्रदान करना है। आज स्नातक छात्रों की रोजगा–योग्यता (employbility) शायद गुणवत्ता का प्राथमिक मानदंड है। येल (Yale) विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर विलियम डेरेसिविक ने आईवी लीग (IVY League) विश्वविद्यालयों में शामिल होने वाले छात्रों के बारे में एक अध्ययन किया है, जिसमें ''येल'' और ''हार्वर्ड'' शामिल हैं, और एक अद्भुत निष्कर्ष भी साथ में आता हैं, (द टाइम्स ऑफ इंडिया, 27 जुलाई, 2014), कि कॉलेज को छात्रों द्वारा सीखने की जगह के रूप में ही नहीं देखा जाता है, बल्कि एक अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी के लिए एक सक्षमकर्ता के रूप में देखा जाता है; और यह भी कि बौद्धिक जिज्ञासा का पहलू इसमें न के बराबर है!

यह व्यापक रूप से माना जा रहा है कि उच्च शिक्षा संस्थानों (Higer Education Institutions –एच.ई.आई.) की रैंकिंग ने उनकी गुणवत्ता में सुधार के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सबसे प्रमुख वैश्विक रैंकिंग के बेंचमार्किंग ढांचे में अनुसंधान गतिविधियों का वर्चस्व है, जिसमें लगभग 70% weightage (राष्ट्रीय रैंकिंग ढांचे में प्रदत्त 30% के विपरीत) हो सकता है; और चूंकि भारतीय एचईआई में अनुसंधान गतिविधियां सबसे कम प्राथमिकता पर हैं (आर. के. गुप्ता और वी. कुमार, यूनिवर्सिटी न्यूज़, फरवरी 11–17, 2019), यह आश्चर्य की बात नहीं है कि वैश्विक रैंकिंग में भारत की रैंकिंग (अर्थात् प्रदर्शन) बहुत खराब है।

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (Indian Institute of Foreign Trade), दिल्ली के अध्यक्ष (अनुसंधान) प्रो. राकेश मोहन जोशी द्वारा यह बताया गया है कि शैक्षिक संस्थानों के मामले में, भारत, लगभग 1000 विश्वविद्यालयों और 40,000 कॉलेजों के साथ, दुनिया की सबसे बड़ी शिक्षा प्रणाली है, जबकि आकार (size) और विविधता (multiplicity) की दृष्टि से यह तीसरे स्थान पर है। लेकिन अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली में इसका स्थान इसकी वास्तविक क्षमता से काफी कम है, जो अभी तक अप्राप्त है! (इंडियन एक्सप्रेस, 1 अगस्त, 2021)। पाठ्यक्रम और शैक्षणिक सामग्री के डिज़ाइन पर कोई नियंत्रण नहीं होने और मूल्यांकन पर नाममात्र के नियंत्रण के साथ, यहाँ के affiliated कॉलेजों के शिक्षक सम्प्रेरित (motivated) महसूस नहीं करते हैं, और सम्बन्धित कॉलेजों के बढ़ते नेटवर्क (जो ''यूजी'' (Under Graduate) छात्रों, के 90%, ''पीजी'' (Post Graduate) छात्रों के 70%; और 80% शिक्षकों के लिए जिम्मेदार ''भागीदारी'' हैं); को अक्सर उच्च शिक्षा प्रणाली की सबसे कमजोर कड़ी के रूप में माना जाता है। इस पृष्ठभूमि में, यू.जी.सी. द्वारा 3 अप्रैल, 2015 को बी.एच.यू., वाराणसी में आयोजित ''क्रेडिट फ्रेमवर्क'' और ''Choice-based क्रेडिट सिस्टम'' पर इस बैठक की कार्यवाही की एक संक्षिप्त रिपोर्ट, रुचिकर हो सकती है। 2 मई, 2015 को ''शिक्षा की सलाहकार समिति'' (Advisory Committee on Education) के समक्ष इस विषय पर प्रस्तुत की गई संक्षिप्त रिपोर्ट, का एक अंश नीचे उद्धृत किया गया है:

> कुलपतियों या उनके नामांकित व्यक्तियों और अन्य प्रतिभागियों ने यूजीसी से प्राप्त निर्देश पर अपनी चिंता व्यक्त की, कि जुलाई, 2015 से पहले एक विकल्प–आधारित क्रेडिट प्रणाली शुरू की जानी चाहिए थी। अधिकांश विश्वविद्यालयों ने ऐसा करने में असमर्थता व्यक्त की क्योंकि कुछ वार्षिक सिस्टम पर थे। दूसरों को अभी भी क्रेडिट प्रणाली शुरू करनी थी, और जिन्होनें क्रेडिट प्रणाली शुरू की थी, वे कठिनाइयों का सामना कर रहे थे; और उनसे सम्बन्धित कई affiliated कॉलेजों ने ऐसा नहीं किया था। फैकल्टी की अदिकांश कमी को एक अन्य बड़ी समस्या के रूप में उद्धृत किया गया था, और यह कहा गया था कि परिवर्तन क्रमिक और चरणों (phases) में आंकलित होना चाहिए।
>
> यू.जी.सी. के ''पैनलिस्ट्स'' (panelists) ने प्रतिभागियों से पूछा कि पहले कहीं और हुई ऐसी तीन बैठकों में, भाग लेने वाले कुलपतियों ने भी क्या इसी तरह की कठिनाइयों को उजागर किया था, और वे इसे नीति निर्माताओं के संज्ञान में लाएंगे!

'उच्च शिक्षा के कॉलेजों में गुणवत्ता संस्कृति को बढ़ावा देना: संस्थागत प्रणाली और नेतृत्व की भूमिका' (University News, 28 मार्च–अप्रैल 3, 2022) नामक एक लेख में, केलकर एजुकेशन ट्रस्ट, मुंबई के सचिव एम. आर. कुरुप ने उच्च शिक्षा की निम्नलिखित चुनौतियों को सूचिबद्ध किया है: खराब बुनियादी ढांचा, खराब पाठ्यक्रम, स्मृति–आधारित परीक्षाएं, अपर्याप्त फैकल्टी, पुरानी शिक्षण–पद्धतियाँ, धन की कमी, असंगत सरकारी नीतियां और सरकारी निर्णयों का नौकरशाही कार्यान्वयन, ''प्रो–प्रॉफिट गवर्नेन्स'', शिक्षा का राजनीतिकरण और बढ़ता निजीकरण।

इनमें से कुछ कमियों पर न्यूज़लेटर के पिछले संस्करणों में चर्चा की गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को जुलाई 2020 में ''लॉन्च'' किया गया था और इसे हितधारकों (stakeholders) द्वारा खूब सराहा गया था। इसका कार्यान्वयन अब प्रगति पर है और ऊपर–सूचिबद्ध विभिन्न समस्याओं का समाधान किया जा रहा है। यह आशा की जाती है कि इसके सफल कार्यान्वयन से भारत को वह गौरव वापस मिलेगा जो उसने प्राचीन युग में प्राप्त किया था, जब पाटलीपुत्र, तक्षशिला और नालंदा विश्वविद्यालय फलते–फूलते थे!

प्रो. वी.बी. गुप्ता,
समन्वयक, दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम द्वारा संकलित

ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम में 2021–22 सत्र में डी.ई.आई. का छात्र नामांकन और छात्र प्रोफाइल पर डेटा (आँकड़े)

2021–22 सत्र के दौरान, यूजी/पीजी डिग्री स्तर के UGC – entitled online Programmes ऑनलाइन मोड में और जैसा कि पिछले कई वर्षों से चल रहा था, सर्टिफिकेट कोर्स ऑफलाइन मोड में चलाये गए हैं।

यूजी/पीजी डिग्री प्रोग्राम के दूसरे और तीसरे वर्ष के छात्र या तो "पहले के डिस्टेंस मोड" में हैं या मुख्य कैंपस के छात्र हैं, जो विभिन्न स्थानों पर आवंटित परियोजनाओं पर आधारित हैं। कोविड–19 महामारी और उससे संबंधित नितियों से छात्रों की संख्या कम रही है!

(क) <u>छात्र नामांकन</u>

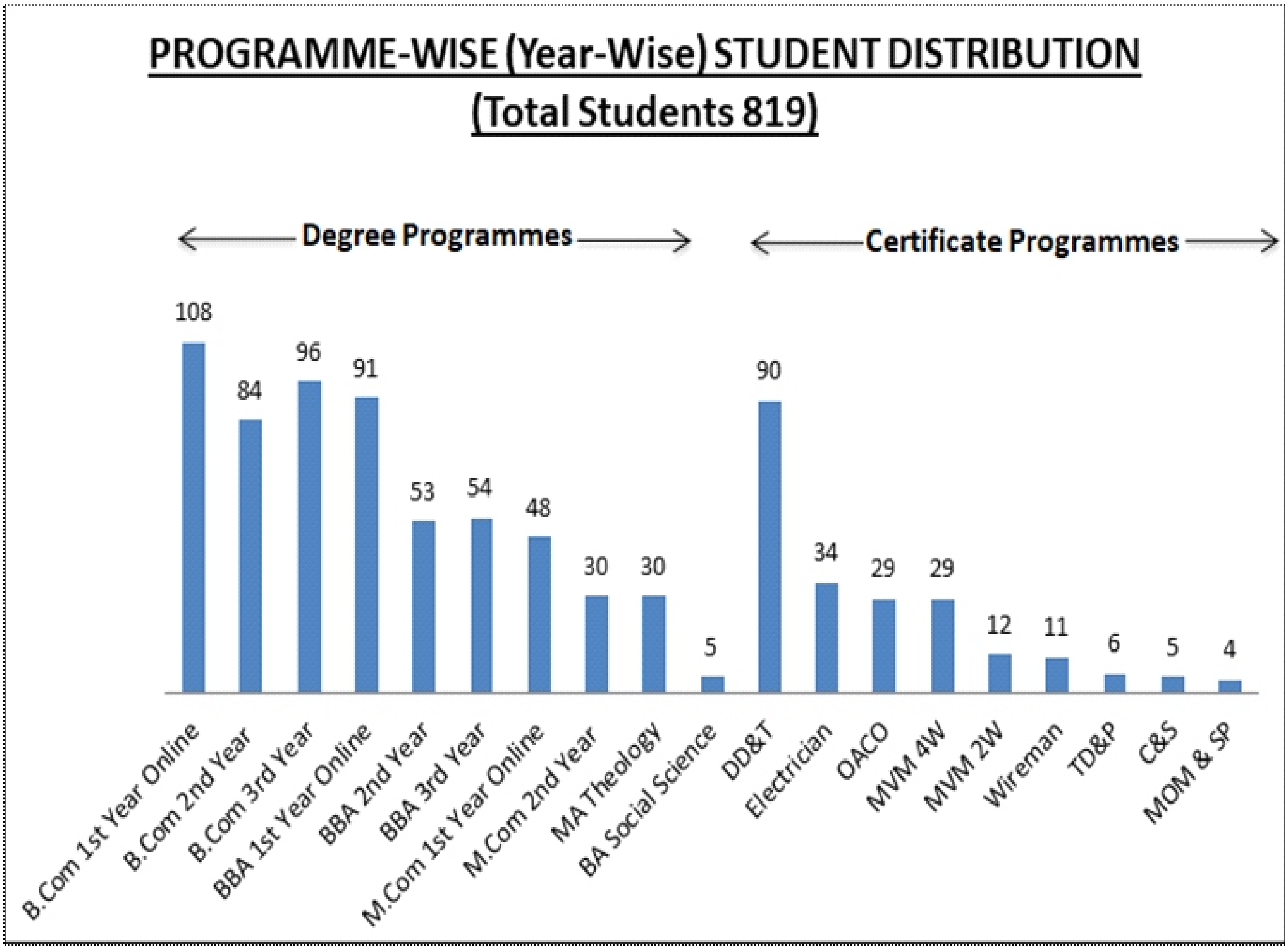

(ख) छात्र प्रोफाइल

छात्र प्रोफाइल पर डेटा नीचे उनकी Category, Area और Gender के आधार पर वितरण दिखाते हुए प्रस्तुत किया गया है।

(i) छात्रों की कुल संख्या (819) के लिए

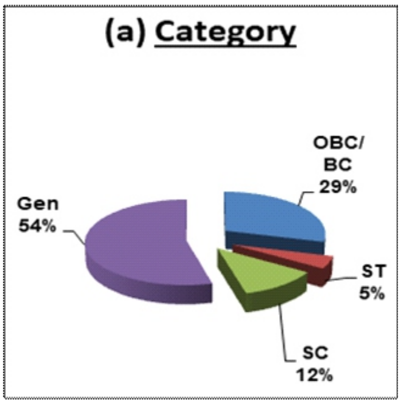

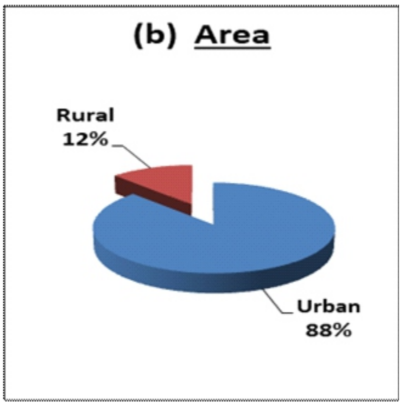

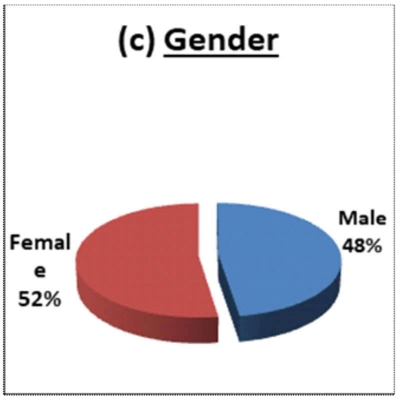

(ii) डिग्री स्तर और प्रमाणपत्र स्तर के छात्रों के लिए अलग–अलग

(क) श्रेणी (Category)

डिग्री स्तर के प्रोग्राम (599)

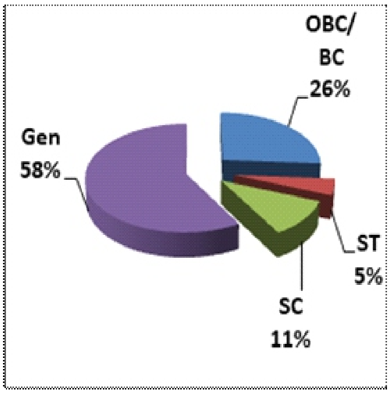

कुल छात्र (819)

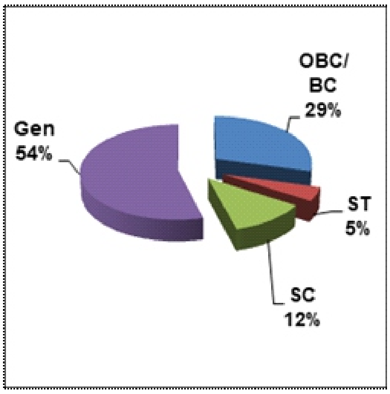

सर्टिफिकेट स्तर के प्रोग्राम (220)

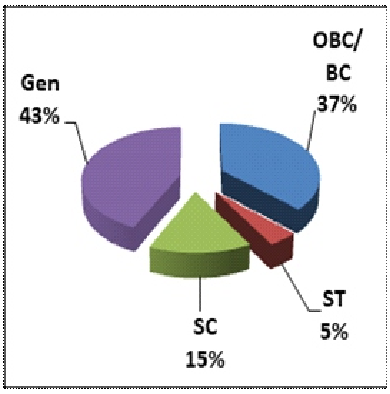

(ख) क्षेत्र (**Area**)

डिग्री स्तर के प्रोग्राम (599)

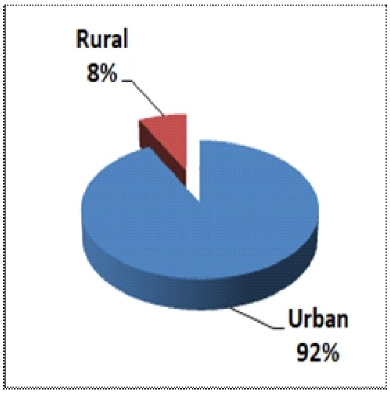

कुल छात्र (819)

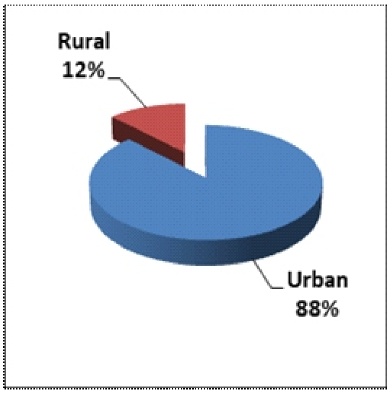

सर्टिफिकेट स्तर के प्रोग्राम (220)

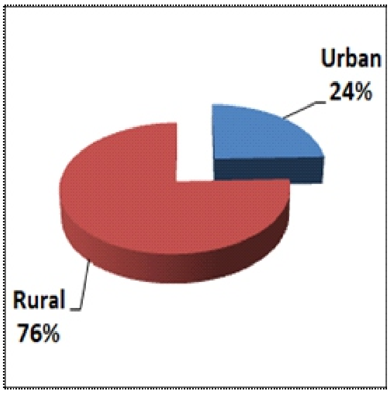

(ग) लिंग (**Gender**)

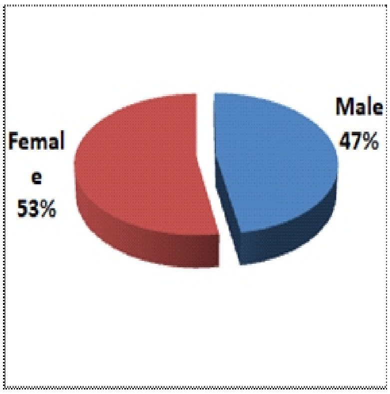

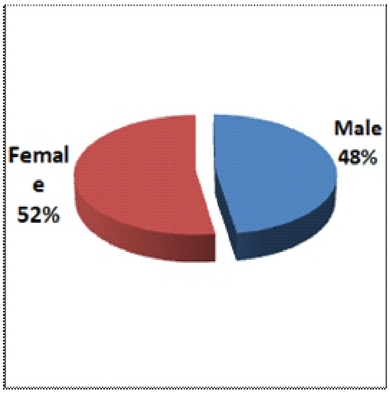

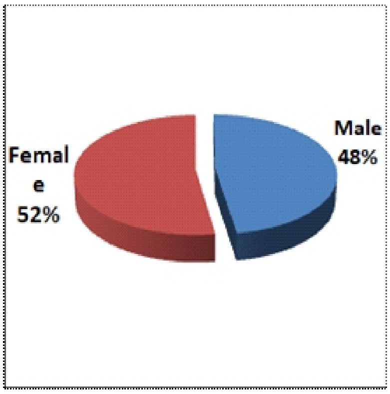

ऊपर दिखाए गए डिग्री स्तर और प्रमाणपत्र स्तर के कार्यक्रमों में छात्र नामांकन वितरण के संबंध में, निम्नलिखित उल्लेखनीय अवलोकन किए जा सकते हैं:

(क) प्रमाणपत्र स्तर के कार्यक्रमों में आरक्षित श्रेणी (Reserved Category) के छात्रों का नामांकन अपेक्षाकृत अधिक है।

(ख) प्रमाणपत्र स्तर के कार्यक्रमों में ग्रामीण क्षेत्र (Rural Area) के छात्रों की संख्या काफी अधिक है।

(ग) डिग्री स्तर और प्रमाणपत्र स्तर दोनों कार्यक्रमों में Male-Female वितरण 50–50 के करीब है।

उपरोक्त टिप्पणियां (क) और (ख) हमारे सामान्य अनुभव के अनुरूप हैं, कि प्रमाणपत्र स्तर के कार्यक्रमों में आरक्षित श्रेणी के छात्रों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक होती है; और ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों की संख्या भी काफी अधिक होती है। ये तथ्य पुष्टि करते हैं कि डिग्री और प्रमाणपत्र स्तर के कार्यक्रमों के लिए निर्वाचन क्षेत्र अच्छी तरह से परिभाषित हैं। अवलोकन (ग); वर्तमान स्थिति में ड्रेस डिज़ाइनिंग और टेलरिंग कार्यक्रम, (जो केवल महिलाओं के लिए है), के प्रभुत्व के कारण, महिला छात्रों की सामान्य संख्या (जो आमतौर पर 40% है), से अधिक है।

सूचना केन्द्र से समाचार

भोपाल केंद्र में अभिविन्यास (Orientation) कार्यक्रम पर रिपोर्ट

भोपाल सूचना केंद्र के शिक्षकों के लिए 8 मई 2022 को, 'रिफ्लेक्शन एक्शन रिफ्लेक्शन' नामक एक अभिविन्यास कार्यक्रम सह–कार्यशाला, का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य उन्हें यह संदेश देना था कि कुछ प्राप्त करने के लिए, केवल कौशल होना महत्वपूर्ण नहीं है, अधिक महत्वपूर्ण है गुणवत्ता, नवाचार और नैतिक मूल्यों के मामले में आपकी सर्वश्रेष्ठ बनने की आकांक्षा और प्रतिबद्धता! कुल नौ शिक्षकों ने भाग लिया और रिसोर्स पर्सन श्रीमती गार्गी सूद थीं।

कार्यक्रम की शुरुआत, एक लघु (non-denominational) प्रार्थना के साथ, सर्वशक्तिमान परमात्मा के स्मरण के साथ हुई। कार्यक्रम की ''थीम'' को लघु ''वीडियो'' के माध्यम से समूह को परिचित कराया गया: वीडियो के माध्यम से वास्तविक शिक्षा के महत्व को समझाया गया: तत्पश्चात, एक सरल प्रयोग की सहायता से, किसी कार्य या परियोजना को क्रियान्वित करने में शामिल किसी भी समूह के टीम सदस्यों के मध्य पारस्परिक सहभागिता के महत्व को समझाया गया। सत्र का समापन, संसाधन–व्यक्ति द्वारा पूछे गए प्रश्नों की एक श्रृंखला पर विचार करते हुए संपन्न हुआ। प्रश्नोत्तर सत्र, सदस्यों के स्व–मूल्यांकन में सहायक सिद्ध हुए।

एक अन्य वीडियो, हमारे पर्यावरण–पोषित व्यक्ति, परिवार, समुदाय और संगठन, की भूमिका को उजागर करने के लिए प्रस्तुत किया गया था। कार्यक्रम अत्यधिक सफल रहा और प्रासंगिक प्रार्थना के साथ संपन्न हुआ!

संरक्षक • प्रो. पी.के कालरा
प्रो. वी.बी. गुप्ता

संपादकीय सलाहकार • प्रो. एस. के चौहान
प्रो. जे.के. वर्मा

संपादक मंडल (अंग्रेजी अंक) • डॉ. सोनल सिंह
डॉ. मीना पायदा
डॉ. लॉलीन मल्होत्रा
डॉ. बानी दयाल धीर
श्री. राकेश मेहता

अनुवादक डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

चित्रण, मुद्रण एवं ई–प्रकाशन • दयालबाग प्रेस